मनुष्य बनो

BEMAN

सम्पादक

व

प्रकाशक

देवीचरन मीतल

लेखराज नगर,

अलीगढ़ ।

२ ई०

वार्षिक मूल्य ४)रु०

दयाल फकीर कृत पुस्तकों की सूची

- मानव धर्म प्रकाश हिन्दी -७५
- आवागवन उर्फ जीवन रहस्य } हिन्दी १-०० } उर्दू -७५
- मनुष्य बनो हिन्दी -७५
- जगत कल्याण हिन्दी -७५
- जगत उभार १-००
- आकाशीय रचना .५०
- फकीर वचनामृत .४०
- राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेट भाग १—२ २-२५
- कर्मभोग या मौज भाग १,२, १-७५
- ५० वर्षीय फकीर अनुभव .५०
- संत सतगुरु वचन १-५०
- उन्नति मार्ग -२५
- विश्व धर्म भाग १ व २ १-७५
- गुरु महिमा १-००

[illegible]

- [illegible] १-००
- सतज्ञान दाता भाग १, २ २·००
- ज्ञान योग १·००

- नाम दान १-००
- सार का सार भाग १,२ २.७५
- मानवता युग धर्म .५०
- निष्कलंक अवतार हिन्दी .५
- मानव कल्याण भाग १,२,३,४,५ ५.
- गरुण पुराण रहस्य १.[illegible]
- अद्भुत मोती .७५
- आजादी की कुंजी .४०
- गुरु वन्दना .६५
- कबीरसार शब्द व्याख्या १.००
- शिव फकीर पत्रावली १.२५
- हृदय उद्गार १.००
- अगम वाणी भाग १,२,३ प्रति १.००
- सुरत शब्द योग १.००
- सत सनातन धर्म अथवा—

[illegible]

- मेरी धार्मिक खोज १.२[illegible]
- अपार के परे १.२[illegible]
- बारहमासा की व्याख्या १.००

महर्षि शिवब्रतलाल कृत पुस्तकों की सूची

- महर्षि शिव की जीवनी उर्दू ५.००
- दयाल योग ,, २.५०
- विवेक कल्पद्रुम १.५०
- सफलता के साधन हिन्दी .५०
- अन्तर्मुखी .५०
- मर्म सन्देश .५०
- गुप्त रहस्य १.००
- जैन वृतान्त .७५
- नवजीवन सुधार ,७५

- मूर्ति पूजा रहस्य ०.२[illegible]
- सत्य सनातन आर्य धर्म १.२५
- रहिमन नीति दोहावली .५
- योग आसन .[illegible]
- सप्त ऋषि वृतान्त .[illegible]
- राजस्थान की ललित ललनायें १.[illegible]
- सत्संग के ८ वचन ०.[illegible]
- पाँच नाम की व्याख्या १.२[illegible]
- हितोपदेश

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदः पूर्णात्पूर्णा मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष २०	जेष्ठ सं० २०२६ वि० मई सन् १९७२	सं० ८/२३५

❋ गुरु नाम महिमा ❋

गुरु ज्ञाता गुरु ज्ञान गम, गुरू ज्ञान के रूप ।
गुरु के चरण सरोज में, सूझे ज्ञान अनूप ॥
गुरु विदेह गुरु गुण रहित, गुरु सबके आधार ।
गुरु की दया अपार से, उतरे भव जल पार ॥
गुरू समाने शिष्य में, ज्ञान भरा भरपूर ।
सुरत शब्द मेला भया, बाजे अनहद तूर ॥
कहाँ ढूंढ़े तू बाबरे, गुरु का रूप निहार ।
गुरु के चरण सरोज में, ज्ञान मुक्ति भंडार ॥
जा सुमिरत ब्रह्मा थके, सुर नर मुनि देवा ।
कहें 'कबीर' सुन साधला, कर सतगुरु सेवा ॥

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज की अमरीका यात्रा

महाराज ता० २४ अप्रैल ७२ को अमरीका गये थे और वहाँ से सकुशल ता० ११ मई ७२ को हवाई जहाज से वापिस आये। अब होशियारपुर पहुँच गये हैं। उनकी यात्रा का वर्णन आगे के अंक में प्रकाशित करेंगे।

—देवीचरन मीतल

धन्यवाद

डा० सोनपाल निवासी गंगीरी जि० अलीगढ़ से उनके सुपुत्र के विवाहोपलक्ष में ५१) रु० 'मानवता मन्दिर' २५) रु० 'मनुष्य-बनो' २५) रु. 'दयाल' तथा २५) रु० 'शिव' के लिये प्राप्त हुये हैं। आपको बधाई है। मालिक से प्रार्थना है कि वर वधु का जीवन सुखमय तथा समृद्धशाली हो।

—देवीचरन मीतल

वार्षिक शुल्क

जिन ग्राहकों पर १ वर्ष से अधिक चन्दा बकाया है उनसे प्रार्थना है कि वह या तो तुरन्त मनीआर्डर द्वारा भेजदें या पत्र लिखदें कि कब तक भेजेंगे अन्यथा आगे से पत्र भेजना बन्द कर दिया जायगा।

जो ग्राहक महोदय यह महसूस ही नहीं करते कि एक अमूल्य भेंट कौड़ियों में उनको घर बैठे प्राप्त हो रही है और जिसके लिये थोड़े से पैसे प्रतिमास देने पड़ते हैं वह भी न भेज सकें तो यही समझा जायगा कि उनको न 'मनुष्य बनो' से प्रेम है न उससे कोई लाभ उठाते हैं। 'मनुष्य बनो' आपको सच्चा ज्ञान दे रहा है यदि उसके प्राप्त करने की अभिलाषा है तो इसे बार २ पढ़िये और इसका चन्दा भी तुरन्त भेज दीजिये या बन्द कर दीजिये।

—देवीचरन मीतल

खेद

प्रत्येक मनुष्य यह जानता है कि यह संसार नाशवान है। जो आया है वह जायगा। यहाँ कोई रहने वाला नहीं है मगर समय आता है कि जब घर के किसी बुजुर्ग का या माँ बाप स्त्री आदि का वियोग होता है तो महापुरुषों को छोड़कर लोग दुखी हो जाते है। रोते पीटते भी हैं। हृदय में एक तूफान सा उठता रहता है, जो उनको रह रहकर दुखी करता है। मेरी स्त्री परलोक सिधार गई। उसके वियोग के दुख से मैं भी बच नहीं सका। मेरी यह दशा नहीं रह पाई जो रहनी चाहिये थी। उनका हृदय निष्कपट था। किसी से न घृणा द्वेष न किसी की बुराई। महाराज जी के प्रति तो उनमें अगाध श्रद्धा थी। जब भी महाराज पधारते तो सबकी सेवा प्रेम से करती थीं। इस प्रकार के अनेक ख्याल समय-समय पर उठते हैं और मन को विचलित कर जाते हैं चाहे वह थोड़ी देर तक रहें या अधिक समय तक यह दूसरी बात है।

मेरा शरीर भी रोगी रहता है। आयु भी काफी हो गई है। मेरी क्या दशा होगी वह मालिक जाने। अब मालिक से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। —देवीचरन मीतल

शोक समाचार

मेरी धर्मपत्नी ता० ५—५—७२ को शरीर स्थूल को छोड़ कर परलोक चली गई। इससे परिवार को सदमा पहुँचा ही है। इसमें हमारे बहुत से भाइयों ने अपनी-अपनी समवेदना प्रगट करते हुये दिवंगत आत्मा की शान्ति की मालिक से प्रार्थना की है। मैं उनको उत्तर देकर व्यक्तिगत रूप से उनका आभार प्रगट नहीं कर सका हूँ किन्तु सब भाइयों का आभारी हूँ।

—देवीचरन मीतल

गजल

(दयालस्वरूप पीरेमुगां साहब देहली)

अरशी बलाओं ने न छोड़ा जमीको
हैरत में डाल रखा है जमीनी मकीं को
अशर्फुलमखलूकात की हालत है आज यह,
इधर उधर रिगड़ता फिरता जबीं को ॥
हिर्सो हविस के चक्कर ने चकरा के रख दिया,
खाक नशीं कर दिया अरशे नशीन को ॥
झाड़ फूँक छोड़ो नहीं आसेब जदा हूँ,
दिल ने पकड़ रखा है गमगीन को ॥
जिंदगी की बलाओं से जब तंग आगया,
रुतबा मिला आला गोशा नशीन का ॥
गर देखना चाहो देखो आंखें बन्द कर,
फिर समझोगे कि ताब नहीं दूरबीन को ॥
क्यों न हो अबरे रहमत की बारिश उस पर,
अपने ही दिल पे जो कोई लाये यकीन को ॥
राह में न कहीं रुकना देखकर मंजर,
आये जहां से लाजिम पहुँचो वहीं को ॥
यह नहीं है तो कौन है हरजा मुहीते कुल,
नजर आये यह नजारा किसी चश्मे बीन को ॥
किसी शे पे मर गया जो मौत से कब्ल,
उसको आना पड़ेगा मर कर यहीं को ॥
जिंदगी की मौत जिंदगीं में गर देखले,
सफर खत्म न जाना पड़ेगा कहीं को ॥
बहतर है तर्क करदो ख्याले तर्क को भी,
क्यों दम मारे कह के 'हां' और 'नहीं' को ॥
बगरना 'पीरेमुगाँ' ही लुटेंगे रातदिन,
लुड़कता रहेगा सदा 'आँ' और 'ईन' को ॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सतसंग

परम सन्त, परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज

शिव समाधि, राधास्वामी धाम

(१३ फरवरी १९७२ महाशिवरात्रि के अवसर पर)

गतांक पृष्ठ ७६ से आगे

तुम्हारी औरत से नहीं बनती, तुम्हारा दिल हर समय कुढ़ता रहता है,
डरता रहता है, सड़ता रहता है। अब वह जो दौलत है, तुम्हारे सुख का
कारण नहीं बन सकती। सुख का कारण तो तुम्हारी मन की शक्तियों की
एकाग्रता है। इसलिये मैंने यह स्तम्भ की बुनियाद यहां रखी, और मैं
चाहता हूँ कि मेरी जिन्दगी के अन्दर ही यह मुकम्मिल हो जाये। आगे
दया मालिक की है। मुझे पता नहीं। तो हिल मिल रहने का मतलब मैंने
बता दिया। इससे तीनों बातें आ गयीं। तुम्हारा घरेलू जीवन भी आ गया,
मुल्की जीवन भी आगया, तुम्हारा आत्मिक जीवन भी आ गया। सब से पहले
अपने आत्मिक जीवन को बनाओ। अगर तुम्हारे मन से अन्दर शान्ति रहती
है, तो तुम घर में भी शान्ती पैदा कर सकते हो। मुल्क में भी पैदा
कर सकते हो। मेरा कभी किसी से कोई द्वेष नहीं हुआ क्योंकि मैं कोशिश
यह करता हूँ कि मैं अपनी तरफ से जहाँ तक हो सकता है, प्रेम का जीवन
गुजारना चाहता। तो प्रेम का जीवन ही सन्तों ऋषियों की तालीम है।
इस प्रेम के माने यह नहीं कि तुम मन्दिर में जाकर प्रेम करके गिड़गिड़ाओ
प्रेम के मानी है तुम्हारे दिल के अन्दर बाल बच्चों के लिये, माँ बाप के
लिये, बहन भाई के लिये अपने सम्बन्धियों के लिये दर्द हो, प्रेम हो।
उनकी गलतियों को दर गुजर करने की कोशिश किया करो। देखो! तुम
सत्संग में आये हो। जो खास करके नये आदमी, मेरा नाम सुनकर या
मेरी किताबें पढ़कर, आये हैं उनको मैं कहता हूँ कि गुरू शब्द को समझो।
कबीर साहब कहते हैं:—

'नाचे कूदे क्या होय बहेना । सतगुरू शब्द समझ ले सेना'

यह कहते हैं इशारे से समझो । मैंने इशारा नहीं किया । मैंने डन्डे मार दिए यानी बिलकुल नंगी करके बात कह दी । जिसका जी चाहे अमल करे, जिसका जी चाहे अमल न करे । यदि तुम में से कोई आदमी मुझ से यह उम्मीद करता है कि मैं किसी को फूंक मार कर सतलोक पहुंचा दूंगा मैं इससे इन्कार करता हूँ । तुम मेरी बात को समझ कर उस पर अमल करने से सतलोक पहुँचोगे. जहां से तुम आये हो । मेरे नाम का ढिढोरा पीटने से तुमने सतलोक नहीं चले जाना । जी चाहे तुम मेरी कोई किताब पढ़ो, तुम्हारा जी चाहे चार पैसे दो, तुम्हारा जी चाहे तुम मेरे सत्संग में आओ, जी चाहे तुम मत आओ । मैं इस बात की परवा नहीं करता । तुम को सच्ची बात बताये जाता हूँ । तो सतगुरु की सैना बैन क्या हैं, मैंने खुले शब्दों मे तुमको बता दिया ।

आप औरतें आई हो, घरवाली हो, बालबच्चे वाली हो । सबसे पहले अपने घरों में शान्ति रखने की कोशिश करो । कुर्बानी करना सीखो । दौलत देना आसान है, किसी के कटु बचन सहना बड़ा मुश्किल है । पैसा सब दे सकते हैं गो यह भी कुर्बानी बड़ी है । हर एक नहीं दे सकता । मगर किसी की बात को सुनकर दिल को दुख नहीं देना यह किसी बड़े सूरमा बड़े सन्त और महा पुरुष का काम है । कटु बचन को सहना बड़ा कठिन है । तुम घरों में रहती हो । घरों में कई झगड़े होते हैं । कई दफा औरत कोई बात कह देती है । कई दफा खाविंद कोई बात कह देता है । जो सतगुरु का शिष्य है वह बरदाश्त करता है । हौंसले से कटु बात को बरदास्त करता है । मैंने तो यह समझा है । रह गया यह कि मैं निकला था खुदा को मिलने-वह मिल गया । वह किस तरह से मिला तुम लोगों की दया से । असली दया तो है सतगुरु की । वह सैन बैन करते थे । मेरी खोपड़ी सैन-बैन नहीं समझ सकती थी । तो इस सैन-बैन को समझने के लिये मुझे यह काम दिया था । मालिक के दर्शन, ये सत्संगियों तुम्हारी दया से मुझको हुए । कैसे हुए ? मैं हमेशा. तुमको कहता रहता हूँ

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। अब जब मुझको यह यकीन हो गया कि मैं होशियारपुर बैठा हुआ न अफ्रीका जाता हूँ न आन्ध्र प्रदेश जाता हूँ। कल ही मधुकर कहता है कि रात को उसने मेरा स्वप्न देखा। मैंने उसको सत्संग कराया। और यही उसने अपनी औरत को कहा। औरत ने भी कहा, बाबा आये थे। सत्संग कराया। धाम में ले गये। अब मैं तो गया नहीं। ऐसे ही लोग मेरे पास चिट्ठियां लिखते हैं। अब मैं अपनी आत्मा से पूँछता हूं फकीरचन्द ! चार दिन की तेरी जिन्दगी है। अगर तू इस बात को परदे में रखकर अपना सम्मान ले जायेगा, इज्जत ले जायेगा, धन ले जायेगा मगर जब तू नहीं जाता है, तो जो इस तरीके से इस अज्ञान में आकर कि बाबा हमारे अन्तर स्वप्न में आया, या अभ्यास में दर्शन दिये-मेरी सेवा करता है, तो जो सेवा उसमें मैं लूंगा, वह मुझको खा जायेगी, क्योंकि उसमें झूँठ है। सच्चाई नहीं।

मुझे एक वहम आ गया है। मैंने बड़े बड़े महात्माओं की पिछली जिन्दगियां देखीं। सन्त तुलसीदास जिन्होंने रामायण लिखी है, पिछली उम्र में उन्होंने तीन साल वो बीमारियाँ झेलीं कि जिसका कोई हिसाब नहीं। मैं ने अपने आपको सन्त सतगुरु कहा है। मैं अपने कर्तव्य को पूरा कर जाना चाहता हूँ। अब मैं सोचता हूं कि उन्होंने तीन साल क्यों यह पीड़ा सही। या तो यह कि उनके पिछले जन्म के कर्म, अगर इस जन्म के कर्म में कहूं तो उनके कर्म यह है कि रामायण में लिखा है।

चित्रकूट के घाट पर, भई सन्तन की भीर।
तुलसीदास चन्दन घिसें, तिलक देत रघुवीर ॥

अब जिन जिन ने इस चौपाई को रामायण में पढ़ा है, उनको यह यकीन हो गया इस बानी से कि तुलसीदास को श्री रामचन्द्र जी चित्रकूट में दर्शन दे गये। और इस ख्याल से कि तुलसीदास को राम मिल गया हुआ है। उन्होंने तुलसीदास की सेवा की और पूजा की। मैं कैसे मानलुं कि वह जो दर्शन हुए तुलसीदास को,वह राम के थे। अगर राम तुलसीदास को दर्शन दे

सकता है, तो वही राम, जिसकी तुलसीदास सेवा करता था, उसकी पीड़ा को नहीं हर सकता था ? सोचो मेरी बात मैं क्या कह रहा हूँ ? ऐसे ही तमाम सन्तों का हाल है। इन्होंने लेन-देन किया और अपना सम्मान लिया, धन लिया, अपने मन्दिर बनवाये, अपनी धामें अपने डेरे बनवाये। मुझे यह वहम आ गया है कि इनको अगर तकलीफ हुई तो शायद इनके दुनियाँ को यह धोखा देने से हुई। मेरे दिल में यह एक वहम है। मैं शायद इन महात्माओं से भी ज्यादा दुःखी होकर मरूं, मुझे क्या पता, मगर कम से कम मैं अपनी आत्मा पर कोई पाप, या कोई बोझ, या कोई धोका लेना नहीं चाहता। आग लगे इस धनको और न मुझे इस गुरूभाई की जरूरत है। मैं तो अपना जन्म बनाने के लिये आया था। तो जन्म बनाना क्या है ? सत्यता, निष्कपटता निःस्वार्थता। जो हेरा फेरी करने वाला पुरुष है, उसके कर्म शुभ कैसे हो सकते हैं। सोचो मेरी बात को मैं क्या कह रहा हूँ। अब मैं सोचता हूँ फकीरचन्द, लोग मुझे गुरू समझते हैं। तेरे पास क्या है ? मेरे पास यथार्थ सन्देश है। क्या ?

कर्म प्रधान विश्व कर राखा ।
जो जस कीन, तो तस फल चाखा ॥

जो जैसा कर्म करता है, उसका वैसा फल उसे मिलता है। अब मैं सोचता हूँ, फकीरचन्द अगर कर्म हमारे वश में हैं, और हम ही अपने कर्मों के जिम्मेदार है, तो फिर हमें क्या करना चाहिये ? हमको अपना कर्म ठीक रखना चाहिये। कर्म का ठीक रखना क्या है ? अपने स्वार्थ के लिए, अपनी इज्जत के लिये, अपने मान के लिये, अपने सुख के लिये दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहिये। दूसरों शब्दों में अपनी नियत को साफ रखना चाहिए। बस यह कर्म है। कर्म तो हम करने के लिये मजबूर हैं। जीवन नाम है कर्म का। तो सब से पहले निष्काम कर्म करो। तुम्हारे बच्चे है। अपने बच्चे समझ कर, मोह के जेर असर उनके लिए काम मत करो। अपना धर्म, और अपना कर्त्तव्य समझ कर काम करो। तुम्हें कोई पाप नहीं कोई पुन्य नहीं

॥ मनुष्य बनो ॥

और अगर हम यह समझ लें कि कर्म हमारे नहीं हैं, वे कर्म और आवागमन को नहीं मानते, तो फिर यह मानना पड़ेगा कि जिस ताकत ने दुनियाँ को बनाया है, वह ईश्वर बड़ा जालिम और निर्दयी है। क्यों? एक बच्चा पैदा होता है। माता निकलती है और अन्धा हो जाता है। वह तो दो साल की उम्र में अन्धा हो गया। उसने क्या कर्म किए। यदि उसके कर्म को नहीं मानते और जिसने दुनियाँ बनाई हैं, उसका काम है, तो फिर वह बनाने वाला जालिम है। सन्तों ने इसको निर्दयी कहा है। काल कहा है। तो उसका क्या इलाज है? उसका इलाज है-उस राज्य से निकल जाओ जिस राज्य में जुल्म होता है। जिस तरह पाकिस्तान जब बना, मुसलमान जो हिन्दुस्तान में रहते थे, वह पाकिस्तान भाग गये और पाकिस्तान में जो हिन्दू थे वह हिन्दुस्तान भाग आए। अब ईस्ट बंगाल में क्या हुआ? तकरीबन ६२ लाख आदमी, जो यह समझते थे कि ईस्ट बंगाल में हम पर जुल्म होगा. भाग कर हिन्दुस्तान चले आए। सन्त कहते हैं भाई, इस दुनियां से भाग चलो जिसमें हम रहते हैं। यह पाप की दुनियां है। इसके बनाने वाले ने हमको दुःख भी दिया और सुख भी दिया। तो सन्तों का जो मार्ग है अपना, वह है दुनियाँ से पार होना कि हमेशा के लिए न हम जन्में, न मरें। न हम शरीर लें। न हमारा मन रहे साथ। फिर हमारा क्या रहे? हमारा अपना आत्मा तो प्रकाश रूप है, आत्मानन्द है। आत्मा की प्राप्ति ही हिन्दू शास्त्रों की तालीम है और वह आत्मा की प्राप्ति कब होगी? जब शरीर और मन को छोड़ कर अपने अन्तर में जो प्रकाश है, सावित्री है, गायत्री मंत्र के मुआफिक उसका साधन करेंगे। मगर इस माया का ऐसा चक्र है, हम जीवों को इसने इतना फंसाया हुआ है कि इस चक्र से निकलना हम चाहते नहीं। जानते भी हैं कि हमको मर जाना है, इस दुनियाँ में रहना नहीं। मगर फिर भी इस दुनियाँ को छोड़ते नहीं। इस दुनियां में जीने की हविस करते हैं। मेरे तेरे को नहीं छोड़ते। इस वास्ते कबीर जो लिखता है, वह सतगुरु शब्द क्या हुआ? दुनियाँ में रहने का तरीका है समता रखनी। घरेलू जीवव में शान्ति, मुल्की जीवन में शान्ति,

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

आत्मिक जीवन में शान्ति। इस माया देश में, जो दुःख सुख का है, जो द्वन्द का है, क्रियात्मक है,जिसमें यह तीन ताप का झगड़ा है,इसमें से निकलने के लिये तुम को यह भजन है। भजन, जो राधास्वामी मत वाले या कबीर मत वाले या तुम्हारे दूसरे गुरु देते हैं। तो सुमिरन, ध्यान भजन करते हुये इस जीवन की यात्रा को खुशी से गुजारते हुए अपने अन्तर वह जो शब्द है जिसको नाम बोलते हैं, जिसको अनहद बानी बोलते हैं, उपनिषद जिसको प्रणाव या उद्गीत कहते हैं, उसको सुनने की कोशिश करो ताकि जब तुम्हारा शरीर छूटे, तुमको शब्द सुनाई दे जाए। प्रकाश आ जाए। और तुम इस शरीर में आने से वच जाओ। यह है सन्त मत की तालीम जिसका निचोड़ मैंने टूटे फूटे लफ्जों में आप लोगों के सामने पेश कर दिया है।

अब मैं सोचता हूँ क्या बाहर का गुरु कुछ नहीं कर सकता? कर सकता है। वह अज्ञानी जीव को, मूर्ख जीव को सहारा देता है। जिस तरह तुम्हारा बच्चा है छोटा। उसको पता नहीं। वह आग को हाथ लगा देता है। चाकू हो उसको भी पकड़ लेता है। हाथ काट लेता है। सर्दी में नंगे फिरता रहता है। निमोनियाँ हो जाने का खतरा रहता है। मां बाप उसकी सम्हाल करते हैं। इसी तरह से जब तक किसी जीव को ज्ञान नहीं होता, तब तक जो बाहर का गुरु है वह दयालता से उसके जीवन में उसकी सम्हाल करता है। वह समझ तो सकता नहीं गुरु के सैन को। उस समय जीवों को चाहिए कि जब तक उनको ज्ञान नहीं हो, बाहर के गुरु की आज्ञा में रहें, क्योंकि तुमको पता नहीं कि उस आज्ञा का क्या भेद है। वह किस लिए तुमको दिया गया है, उस बात पर नासमझ हुज्जत करते हैं कि क्यों गुरु ऐसा काम बता देता है करने को, जो दूसरे अच्छा नहीं समझते यदि हाफिज कहता है कि मुसल्ला को शराब में रंग कर नमाज पढ़ने को,तो पढ़ो। जीव जो है, अज्ञानी है। इस वास्ते गुरू मत की तालीम है। अज्ञानी जीवों को अपने अपने गुरू से राय लेनी चाहिए। जो गुरू किसी की दुनियाँ की जिन्दगी को नहीं सम्हाल सकता, वह गुरू उसकी आत्मिक जिन्दगी को भी

नहीं सम्हाल सकता । वह गुरुही क्या हुआ । कई आजकल के गुरू कहते हैं । हम सिर्फ परमार्थ के ठेकेदार हैं,अन्त समय में ले जायेंगे । यह एक धोखा है । और धोखा भी मैं नहीं कहता, एक किस्म का झूठा सहारा या आसरा है । हालांकि झूठे आसरे का नुकसान गुरुओं को होता है । मैंने बोला, बड़े-बड़े महात्माओं की पिछली जिन्दगियां मैंने देखी हैं । स्वामी राम कृष्ण परम हंस को कैंसर आफ थ्रोट हो गया । राधास्वामी दयाल पिछली उम्र में दो साल बीमार रहे । दाता दयाल की धाम उजड़ गयी बाबा सावनसिंह बीमार हुए । इन तजुर्बात ने मेरी आंखें खोल दीं ।

अब मैं जानता हूँ कि मैं इतनी साफ बयानी करता हूँ इससे मेरा दायरा नहीं बढ़ सकता और न मुझे लोग इतना पैसा ही देते हैं । सिर्फ समझदार आदमी जो दिमाग वाले हैं वह देते हैं और मेरा सत्संग भी हर एक के लिये नहीं । मैं हंसों के लिये आया हूँ । योगियों के लिये आया हूँ, साधुओं के लिये आया हूँ, सन्तों के लिये आया हूँ । तो जो कुछ है, तुम्हारे अपने मन में है । कबीर साहब का शब्द था ।

हिलमिल मंगल गाओ मेरी सजनी, भई प्रभात बीत गई रजनी ।

अज्ञान का समय चला गया । अब हिल मिल के मंगल गाओ जैसा मैंने बताया है । घर में शान्ति रखो और अपने अन्तर साधन करो और अपने अन्तर शब्द को पकड़ो ।

नांचे-कूदे क्या होय बहेना । सतगुरु शब्द समझ ले सैना ।

कबीर कहते हैं भाई नाचते फिरने से क्या बनता है । सत गुरु की बात को समझो कि वह क्या कहते हैं । सतगुरु इशारा करता है । पिछले जमाने में सब सन्तों ने इशारा किया । जो भेद था, उसे छिपाकर रखा । कबीर साहब ने धर्मदास को भेद देकर कह दिया । धर्मदास तोहे लाख दुहाई, सार भेद बाहर नहि जाई । धर्मदास तुम्हें सौगन्ध है असली सार भेद न खोलना । मैंने इस सार भेद की बात को खोला । क्यों खोला ? कुछ तो अपने जैसे अज्ञानी गृहस्थियों के लिये और कुछ अपनी जान बचाने के लिये

ताकि लोग मेरी इज्जत गलत तरीके से न करें। मैं गलत तरीके से इज्जत मान नहीं लेना चाहता।

अगर किसी को मुझ से कुछ मिलता है, होगा कुछ मेरे पास, मुझे पता नहीं। चार दिन जीना है। झूठा पाखन्ड क्यों करूँ। मैं बीतराग पुरुष हूँ गो अभी १००% नहीं हुआ। वीतराग कहते हैं रागरहित, मायातीत, माया से परे को। हर आदमी के अन्तर से रेडीयेशन निकलती हैं। जो आदमी ऐसे पुरुष का, जो मायातीत हो, दर्शन करता है, सतसंग करता है, प्रेम करता है, उसकी रेडीयेशन उसमें जाती है। यह कुदरती बात है। जिस तरह गुलाब के फूल से खुशबू का निकलना लाजिमी है, इसी तरह से अगर किसी को मेरे ध्यान से या सत्संग से, या मेरे बचनों से लाभ पहुंचता हो तो हो सकता है पहुंचता हो। अगर मैं चाहूँ कि अपनी रेडीयेशन तुमको दूँ, उनको न दूँ इनको दूँ उनको न दूँ, यह गैर मुमकिन है। गलत है। जैसे गुलाब के फूल में यह ताकत नहीं है कि वह किसी को खुशबू दे और किसी को न दे। यह तो खुशबू लेने वाले की ताकत पर निर्भर है। फूल का तो स्वभाव है खुशबू देना। इसी तरह से सन्त का स्वभाव है। जो भी उसके पास जाता है उसकी रेडीयेशन जाती रहती है। उसका फायदा सबको उसके सत्संग द्वारा पहुंचता है। एक मिसाल देता हूँ गन्दी, ताकि तुम बात को समझ जाओ। जिस पुरुष के अन्दर काम अंग है, और जब्त नहीं है तो किसी सुन्दर युवती स्त्री को देखकर उसका मन विचलित हो जाता है मगर स्त्री को तो पता नहीं होता। अगर स्त्री को पता लग जाये कि इस पुरूष के मन के अन्दर विचलितपना आया है, तो वह शायद जूती उतार कर उसको मारेगी, गाली निकालेगी। मगर एक बच्चा है दो साल का उसके अन्दर काम की उत्तेजना नहीं है। अगर उस स्त्री को देखेगा, तो उसमें काम की खलबली पैदा नहीं होगी, क्योंकि उसके अन्दर काम का अंग नहीं है। इसी तरह जो संसार के अशान्त पुरूष हैं, किन्तु सन्त या महा पुरुष के दर्शन या सम्पर्क से उनके मन में तबदीली आ

जाती है, चित की वृति बदल जाती है, शान्ति आ जाती है, क्योंकि वह संसार से दुखी होते हैं और सच्ची शान्ति के इच्छुक होते हैं, इसलिये वह शान्ति की तरफ दौड़ते हैं। शान्ति हासिल करने के लिये, जिस तरह कामी को युवती स्त्री देखकर विचलितपना आया था इस तरीके से हो सकता है किसी को मेरे पास से फायदा पहुँच जाये।

ओये जीना चन्द रोज दा।
ओये का तू पखण्ड जगावे फकीरा, जीना चन्द रोजदा।
लाखों तेरे जैसे साधू आये, लाखों आये महन्त।
अपनी-अपनी बोलियां बोल गये, सब चले गये अन्ता।
किसी ने बताया कुछ नहीं, ओये जीना चन्द रोज दा।

मेरे जिम्मे एक ऋण था दातादयाल का! ऐ दातादयाल। मौज मुझ को आपके चरणों में सन १९०५ में लेगई। आपका अहसान, आपकी दया, आपका वह मेरे अज्ञान को सम्हालना, मेरे प्रेम के बदले प्रेम का जबाब देना, उसका मैं कृतज्ञ हूँ। जो काम अपने मेरे सुपुर्द किया मैं महसूस करता हूँ मेरे ही भले के लिये था। वह होगया। अब तो जी चाहता है, वह जो दायमी नाम है, उसमें हमेशा के लिये चला जाऊँ। न रहे बांस न बजे बाँसरी।

'स्वांसा तारी सुरत संग लावे, तब हंसा अपना घर पावे।

तुम्हारा घर क्या है? पिंड, अण्ड, ब्रह्मण्ड से परे। जिस्म मन और विचारों से परे, प्रकाश और शब्द हमारा घर है। हम ही नहीं, हर एक चीज प्रकाश और शब्द से यहां बनी है। जर्रे-जर्रे में आत्मा मौजूद है। आत्मा क्या है? प्रकाश है। तुम्हारा आदि घर शब्द है।

आज मैंने बहुत कुछ कह दिया। कोई कसर नहीं छोड़ी। अगर पार जाना चाहते हो तो अन्तर के शब्द को पकड़ो। दुनियां में जीना चाहते हो तो मन को काबू करो, मन पर सवारी करो।

राम की मौज

राम जो करते हैं अच्छा करते हैं।

(ले०—महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज)

दक्षिण में नर्वदा के किनारे प्राचीन काल में कोई राजा राज करता था। उसके राजकुमार की मित्रता मंत्री पुत्र और सेठ पुत्र के साथ थी। और मित्रता भी बहुत गहरी। यह तीनों साथ-साथ रहते, साथ-साथ पढ़ते और साथ ही साथ सैर और शिकार को जाया करते थे। संयोग से वह एक दिन जंगल में शिकार खेलने गये थे। दिन भर परेशान रहे। कोई हिरन या परढ़ा हाथ न लगा। जब शाम होने आई वह घर को लौटे मगर रात होगई थी। नदी के किनारे एक साधु रहता था। न किसी का लेना न किसी का देना। सबसे अलग थलग। तीनों लड़के उसकी कुटी में आये। शिकार न मिलने और रात होने की शिकायत करने लगे। साधु बोला—राम की मौज ! राम जो करते हैं अच्छा ही करते हैं। राजकुमार को यह बात बुरी लगी क्योंकि वह खुशामद पसन्द था मगर अवसर और तरह का था। कुछ न बोला। हाँ मन में समझ गया कि साधु को इसके शिकार न मिलने पर अफसोस नहीं किन्तु खुशी है। चूंकि शहर दूर था। तीनों विवश वहाँ रहे। सुबह होते ही साधु से बिदा होकर घर की ओर चले। जब साधु को नमस्कार किया तो आशीर्वाद देने के बजाय वही बात फिर कही—राम की मौज ! राम जो करते हैं अच्छा ही करते हैं क्योंकि उसकी जुबान पर हमेशा यही शब्द रहते थे। तीनों लड़कों को यह शब्द अच्छे नहीं लगे मगर चुप-चाप घर चले गये।

दूसरे अवसर पर कई महिनों बाद वह फिर शिकार खेलने गये थे। देर तक हिरनों के पीछे घोड़ा दौड़ाते रहे मगर शिकार मिला या नहीं मिला, इसका हाल नहीं मालूम।

हाँ पहाड़ी के एक दामन में घोड़ों के पाँव जो फिसले तो तीनों के तीनों जमीन पर आ पड़े। चोट लगी। राजकुमार की एक आँख फूट गई। मंत्री

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

के लड़के का पांव टूट गया और सेठ पुत्र का हाथ उखड़ गया। तीनों की दशा खराब होगई। कुछ पहाड़ियों ने दया की और उसी साधु की कुटी में उठा लाये। साधू ने फिर वही शब्द कहे—राम की मौज ! राम जो करते हैं अच्छा ही करते हैं। दया और प्रेम से उनकी मरहम पट्टी की। अच्छे तो वह क्या होते, हाँ दर्द को आराम हो गया। जब तक वहाँ पड़े रहे, यही आवाज सुनते रहे। राम की मौज ! राम जो करते हैं अच्छा ही करते हैं। मंत्री पुत्र को साधु की बातें बहुत बुरी लगीं। वह आपस में कहने लगे—देखो इस साधु को हमारे साथ कोई सहानुभूति नहीं है मानों वह चाहता था कि हम ऐसी आपत्ति में पड़ें। राजकुमार ने कहा—पहिली बार भी उसने ऐसा ही कहा था और अब भी वही हांक लगा रहा है। सेठ का लड़का बोला—यह इन्सानियत और शिष्टाचार से गिरा हुआ है। जरा अच्छे होलें तो इस दुष्ट को इस गुस्ताखी का दण्ड दें। तीनों सहमत होगये।

जब जरा आराम मिला, वह शहर में आये। वैद्य हकीमों का इलाज शुरू हुआ। अच्छे तो वह हो गये मगर आँख, पांव और हाथ का ऐब दूर न हो सका। जब ठीक होगये तो उनको साधु के दण्ड देने की सूझी। वह तीनों फिर सशस्त्र होकर उसकी कुटी में आये। मगर संयोग की बात कि साधु टट्टी होने जंगल को गया था। वहां उसके कपड़े कांटों में उलझ गये। देह छिल गई और वह झाड़ियों से न निकल सका ! तीनों लड़के देर तक इन्तजार करते रहे। अन्त में जब घबराये तब घर लौटने का इरादा किया। जब वह चले गये, दो एक भील जो साधु के शिष्य थे, कुटी में उसको न पाकर उसको खोजते हुये झाड़ियों के पास पहुँचे, जहाँ कांटों में उलझा हुआ साधु जोर जोर से कह रहा था—राम की मौज ! राम जो करते हैं अच्छा ही करते हैं। भील उसको कठिनाई से निकालकर उठा लाये। घावों को धोकर जड़ी बूटी लगाई, जिससे वह अच्छा होकर उसी तरह रहने सहने लगा।

दूसरी बार यह लड़के फिर साधु को मारने को घर से बाहर निकले। साधु वहाँ नहीं था। राह में उसका सिर पेड़ से टकराया। खून बहुत

निकला और वह बेहोश होगया। लड़के तो इन्तजार करके चले गये। भीलों ने फिर उसे लाकर कुटी में रक्खा और इलाज करके ठीक किया। वह आपत्ति के समय भी वही बात कहता रहा।

किसी गाँव में जो नदी के किनारे पर था, साधु की दावत थी। वह तो वहां चला गया। वे लड़के फिर आये और उसको न पाकर अचम्भे में पड़ गये। पता पूछा तो पता मालुम होने पर भेष बदले हुये उस गाँव में आये। साधु से मिले। साधु चूंकि पवित्र हृदय था धोखा खा गया और लड़कों के साथ एक नाव पर बैठकर कुटी की ओर चला। नदी चढ़ी हुई थी। बर्सात का मौसम था। एक गहरी जगह पहुंचकर सेठ पुत्र ने राजकुमार और मंत्री पुत्र को इशारा किया। तीनों ने साधु को पकड़ लिया और पानी में फेंक दिया। साधु पानी में गिरते समय फिर बोला—राम की मौज ! राम जो करते हैं अच्छा ही करते हैं। यह कहकर गोता खा गया और नाव आगे की ओर बढ़ गई।

नाव जा रही है। उस पर चार आदमी बैठे हैं। एक मल्लाह और तीनों यह लड़के। मल्लाह को किसी न किसी तरह यह मालुम था कि एक आँख वाला युवक राजकुमार है। इसलिये साधु की हिमायत करने का साहस न हुआ। संयोग की बात कि पीछे एक और नाव नदी में तैरती हुई दिखाई दी। उस पर दस बारह भील बैठे हुए थे। उन्होंने पास पहुँचते ही तुरन्त उस नाव पर हमला कर दिया। यद्यपि तीनों युवक दिलेर थे मगर भीलों के सामने कुछ न चली। भीलों ने उनको पकड़ लिया और मल्लाह को छोड़ दिया। और तेजी से नाव को आगे बढ़ाया। राह में साधु की कुटी भी दिखाई देती थी। जब भील बहुत दूर निकल गये और कोई भय नहीं रहा युवकों को एक-एक करके देखने लगे। राजकुमार को देखा। बोले यह तो किसी काम का भी नहीं है। मंत्री पुत्र को लंगड़ा और सेठ पुत्र को लूला पाया। मन में बड़े निराश हुये। राजकुमार ने पूछा तुम कौन हो ? और क्यों हमको पकड़ कर लिये जाते हो ? वह बोले क्या बतायें। हमको दशहरा से पहिले अष्टिमी को देवी के मन्दिर में आदमी का बलि देना था !

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

तुमको पकड़ा मगर तुम तीनों अंगहीन हो। हमारे काम के नहीं। तुमको क्यों ले जायें और उनको छोड़ दिया और झटपट नदी की मंझधार में गिराकर दृष्टि से ओझल हो गये।

यह तीनों तैराक थे यद्यपि सेठ पुत्र का एक हाथ खराब था मगर उसने अपने आपको लहरों की दया पर छोड़ दिया जैसाकि और साथियों ने भी किया था। बहते हुई नदी जल में हाथ पाँव मारने की इतनी आवश्यकता न थी। बँधे हुये पानी में तैरना कठिन होता है। जिस समय साधु की कुटी के पास पहुंचे एक आदमी धम से पानी में कूद पड़ा और तीनों को लाकर किनारे पर खड़ा कर दिया और हांक लगाई—रामजी की मौज ! राम जो करते हैं अच्छा ही करते हैं। उन्होंने पहिचान लिया कि यह तो वही साधु है जिसको उन्होंने गहरे पानी में डुबोया था। पूछा—तुम यहाँ कहाँ ? उत्तर दिया तुम्हारे बचाने के लिये। राम जी की मौज ! राम जो करते हैं अच्छा ही करते हैं।

तीनों बड़े आश्चर्य में पड़ गये। साधु के पाँव पर गिर पड़े। वह उनको अपनी कुटी में लाया। कपड़े उतरवाये। आग जलाई और एक एक लंगोटी पहनने को देकर आग से तपने को कहा। सूर्य अस्त हो चुका था। रात हो गई। घर जाना कठिन था कपड़े सूखे नहीं थे। विवश साधु के महमान बनना पड़ा।

बातचीत हुई। साधु ने कहा—तुमने जिस समय मुझको पानी में फेंका मैं गोता खो गया। जब उभरा तो तैरने लगा। तैरना मुझको आता है। झटपट किनारे आ लगा और अपनी कुटी पर आ गया। तुम अपने दुर्व्यवहार पर खेद न करो। राम जी की मौज ! राम जो करते हैं अच्छा ही करते हैं। क्या आश्चर्य कि मैं तुम्हारी रक्षा के लिये पहिले से पानी में फेंका गया हूँ। उसमें राम का हाथ था। वही सब करता रहता है।

युवकों की लज्जाजनक दशा का कौन वर्णन कर सकता है। वह फिर उसके पाँव पर गिरे। अपराध की क्षमा चाही। साधू बोला—राम जी की मौज ! राम जो करते हैं अच्छा ही करते हैं।

तब राजकुमार ने अपने इरादों की कहानी आदि से अन्त तक सुनाई। साधू ने झाड़ी में फँसने और सिर को पेड़ से टकराने की घटनाओं की तारीखों को उनकी कुटी में आने के दिनों का मिलान किया और हँसकर बोला—राम जी की मौज ! राम जो करते हैं अच्छा ही करते हैं। यदि मैं झाड़ी में न फँसता अथवा मेरा सिर पेड़ से न टकराता तो कौन जाने तुम्हारे हाथ से मारा जाता। यहाँ सूली का काँटा बनाया गया। धन्य है धन्य है भगवान तेरी दया को।

राजकुमार ने नम्रता के साथ कहा कि यदि तुम शिकार की निराशा और हमारे शारीरिक कष्ट के समय यह शब्द मुँह से न निकालते तो हम कभी क्रुद्ध न हुये होते और न तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार करने पर तत्पर होते। साधु ने उत्तर दिया कि मैं क्यों न ऐसा न कहता। यह मेरा मंत्र है। यह मेरा परम जाप है। मैं इस तरह कहता हुआ हमेशा राम का भजन करता रहता हूँ मगर क्या मेरी तरह तुमको अपनी आपत्तियों से नये-नये अनुभव और नई-नई शिक्षायें नहीं मिलीं। राजकुमार बोला—महात्मा ! तुम सच कहते हो। यदि हम अंगहीन न किये जाते तो देवी के मन्दिर में हम तीनों का बलिदान होता क्योंकि तुम्हारे पानी में गिर जाने के बाद ही पहाड़ी भील हमको पकड़ लेगये। ध्यान से देखने पर जब हमको अंगहीन देखा तो निराश होगये। और हमारे साथ वही व्यवहार किया जो हमने तुम्हारे साथ किया था।

साधु ने फिर मस्त होकर पुकारा—राम जी की मौज ! राम जो करते हैं अच्छा ही करते हैं।

तीनों युवक रात भर कुटी में पड़े रहे। सुबह को साधु के चेले होगये और शहर की ओर चले आये।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

प्रवचन

परमसंत दयाल फकीरचन्द जी महाराज

स्थान इटारसी २—२—७२

जग में गुरु समान नहीं दाता ।
वस्तु आगोचर दई सतगुरु ने, भली बताई बाता ।
काम क्रोध कैद कर राखे, लोभ को लीनो नाथा ॥
कल को करे सो हाल ही करले, फिर न मिले यह साथा ।
चौरासी में जाय पड़ोगे भुगतो दिन और राता ॥
शब्द पुकार-पुकार कहत है, करले संतन साथा ।
सुमिर बन्दगी कर साहब की, काल नबावे माथा ॥
कहें कबीर सुनो हो धरमन, मानो बचन हमारा ।
पर्दा खोल मिलो सतगुरु से, आओ लोक दुबारा ॥

आप लोग मातायें बहिन भाई आये हैं । मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि यह सत्संग का काम क्यों करता है । आखिर दुनियां को क्या कहना चाहता है । मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ उसकी तुम लोगों कोआ वश्यकता नहीं है ।

मैं सन् १९०५ ई० में जब इस मत में आया था तो इस मत की बाणी पढ़कर और शब्दों को सुनकर, जिनमें यह लिखा है कि वशिष्ठ भी भूल गये और व्यास से भी भूल गये और वेदान्ती भी असलियत को न समझ सके, ऐसी बातें सुनकर मैं पागल हो गया। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते पर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा, वह संसार को बता जाऊँगा । इसलिये जो कुछ मुझको प्राप्त हुआ वह मैं निज अनुभव के आधार पर बता रहा हूँ ।

इस शब्द में कबीर का कथन है कि सतगुरु के समान कोई हितकारी नहीं है । वह अगोचर क्या है ? वह मैं बताना चाहता हूँ । मैं अपने आपको संत सतगुरु कहता हूँ । आप कहेंगे मैं अहंकारी हूँ लेकिन मैं अहंकारी नहीं

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मौजूद थे तो मरते समय वही विचार उसके सामने आये ।

यदि आप लोग मुझसे कुछ लेना चाहते हो तो ले लो वरना तुम्हारी इच्छा ! मैं तो सच्ची बात बताने आया हूँ कि बाहर से कोई भी किसी के अन्तर नहीं जाता । जो कुछ भी दृश्य वह देखता है वह सब उसका अपना विश्वास होता है और उसके मन का ही खेल होता है । मुझे आप लोगों से किसी चीज की आवश्यकता नहीं है किन्तु यह चाहता हूँ कि तुम लोग अपना जीवन बनालो । तुम जिस रूप में उस मालिक को याद करोगे वह उसी रूप में तुम्हारी सहायता करेगा । मैं सच कहता हूँ कि सबने तुमको मूर्ख बनाकर अपनी जेब भरी हैं । उन्होंने यह सचाई की बात नहीं बताई । कोई कहता है राम आ गये, कोई कहता है कि मेरे अन्तर कृष्ण आ गये, कोई किसी गुरु या देवी का नाम लेता है । मगर सचाई यह है कि कोई भी बाहर से उसके अन्तर नहीं आता । यह नई बात नहीं तो और क्या है ? लेने देने की तो कोई बात नहीं । मैं कब कहता हूं कि न दो मगर सोच समझ कर दो । अज्ञान से लुट न जाओ । अब यह माई मुझे अपने घर भोजन कराना चाहती है । मैंने सचाई वर्णन करदी है । अब चाहे वह मेरी सेवा करे मुझे कोई दोष नहीं है क्योंकि ज्ञान से जो काम किया जाता है उसका दोष नहीं होता । अज्ञान की भक्ति फँसाव का कारण बनती है । जोगेन्द्रसिंह ! मैं क्या कह रहा हूँ ? आँखें खोलो और अपना जीवन बनाओ । जब तक किसी को पूर्ण ज्ञान नहीं होता वह काम क्रोध मोह और अहंकार से बच नहीं सकता है । अपने अज्ञान के कारण मनुष्य इनमें फँसा रहता है और इनका असली रूप समझ लेने पर वह शान्ति से अपना जीवन व्यतीत कर सकता है, क्योंकि जब तक जीवन है इनसे कोई भी बच तो सकता नहीं, लेकिन इनका यथायोग्य व्यवहार के लाने से आनन्दमय जीवन बन सकता है । जो लोग यह चिल्लाते फिरते हैं कि इन पांचों को मारने से ही आनन्द प्राप्त होता है, मैं उनसे सहमत नहीं हूँ क्योंकि इनके बिना जीवन चलता नहीं और आनन्द-दायक नहीं रहता । इनको समझ कर चलने से जीवन आनन्दमय बनता है । इन पाँचों से बचने का एक मात्र उपाय जो

मेरी समझ में आया है वह है किसी सतगुरु की अर्थात् संत सतगुरु वक्त की संगत और सेवा। तुम लोग सेवा यह समझते हो कि गुरु को रुपये दे दिये, अच्छे-अच्छे कपड़े और फल दे दिये। निस्संदेह यह भी सेवा है। मैं इससे इन्कार नहीं करता क्योंकि जो कुछ तुम दोगे वही तुमको मिलेगा लेकिन असली सेवा है गुरु की बात को सुनना, समझना और गुनना।

सब ही आये सतगुरु आगे।
दर्श न पकड़ा बचन न लागे ॥
कहो इस सत्संग से क्या फल पाया।
वक्त गया और जनम गंवाया ॥

जो गुरु की बात को सुनकर उस पर क्रियान्वित (अमल) नहीं होता वह अपना समय नष्ट करता हैं। ऐसे जीवों का जन्म अकार्थ जाता है। मैं सच कहता हूँ कि मैं मेजर सोमवत्त के अन्तर नहीं गया। यदि मैं इस बात को पर्दे में रखकर आप लोगों से सेवा लेता हूं तो क्या मैं आप लोगों को धोखा नहीं दे रहा। क्या मुझे ऐसी सेवा लेने का अधिकार है, जिसमें मैंने कुछ नहीं किया और न मुझे किसी बात का पता है। जो गुरु मुँह बनाकर ऐसे ढंग से बातचीत करते हैं और दूसरों को विश्वास करा देते हैं कि हाँ हमने तुमको दर्शन दिये थे, तुम्हारी सहायता की या तुम्हारा कष्ट दूर किया, वह धोखा देते हैं और तुम अपने अज्ञान से उनके चक्कर में आकर लुट जाते हो। हो सकता है कि तुम्हारे विश्वास के कारण तुमको लाभ पहुंच जाय मगर वह गुरु इस अपराध से नहीं बच सकता। चूँकि मैं सचाई वर्णन करता हु इसलिये मैं अपने आपको संत सतगुरु वक्त कहता हूँ। अपनी सुरत को देह, मन और आत्मा से ऊँचा ले जाकर अपने असली इष्ट में लय हो जाना ही सच्ची सतगुरु भक्ति है। इसी का नाम दयाल पद या चौथा पद है। जब तक जीव किसी भी ख्याल में बँधा हुआ है वह अपने निज घर नहीं जा सकता। यह तो प्रेम का मार्ग है। यदि तुम्हारे अन्तर प्रेम है तो स्वयं दर्शन होते रहेंगे लेकिन जो दुनियां के पदार्थों में लिप्त रहेंगे वह निज घर नहीं जा सकते। आपका इष्ट तो अपना ही निज स्वरूप

है। जब आप सच्चे होकर उसको याद करोगे तो वह झट आपके अन्तर प्रगट हो जायगा। मैं किसी को फकीरचन्द की देह के साथ बांधना नहीं चाहता। मैं तुम सबको स्वतन्त्र करने आया हूँ लेकिन तुम अज्ञान बश मुझे भी साथ बांधना चाहते हो। बार-बार कहा जाता है कि संतों का सत्संग करो। वह तुम्हारी सहायता करेंगे। तुमने सत्संग का मन्तव्य नहीं समझा इसलिये तुम लोग इन गुरुओं के हाथों लुटे जा रहे हो। मानवता मन्दिर में मुझे भी रुपये की आवश्यकता है। पैसा दो मगर समझ सोचकर दो। अज्ञान की भक्ति आज भी दुखदाई और कल भी दुखदाई होगी। इसलिए सोच समझकर सच्चे साहब की बन्दना करो। वह गुरु से ज्ञान प्राप्त करके हो सकती है। गुरु तुम्हारे हित के लिए सच्ची बात बतलाता है जैसे धर्मदास को कबीर साहब कह रहे हैं कि ऐ धर्मदास! मेरे बचन को मानो। यह वह धर्मदास है जिसने लाखों और करोड़ों रुपये कबीर साहब की सेवा में भेंट किये। कबीर साहब फिर भी उसको कह रहे हैं कि ऐ धर्मदास! सच्चे सत्गुरु से मिलो। यदि कबीर साहब असली सत्गुरु होते तो क्यों ऐसा कहते किन्तु चुप हो जाते।

मनुष्य अपने ही मन की कल्पना से दुखी हो जाता है क्योंकि यह उसका अज्ञान है। इसलिये मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि अपने संकल्प को ठीक रक्खो और अपनी नीयत को शुद्ध रक्खो। ऐसा करने से तुम दुख से बच जाओगे और अपने असली घर जाने के अधिकारी बन जाओगे। हमें एक दूसरे से घृणा नहीं करनी चाहिए। जब तक हम तन मन और ब्रह्माण्ड के आधीन होने के कारण अपने निज स्वरूप से विमुख हैं हमारा कल्याण नहीं हो सकता।

हमारा निज स्वरूप परम तत्व आधार जो केवल शब्द ब्रह्म है, इससे भी परे है। कितना अज्ञान है कि लोग मेरे पांव धोकर पीते हैं। तुमको क्या पता कि मुझे कोई बीमारी है। यदि है तो तुम भी उस रोग में फँस जाओगे। तुम लोग मेरी देह को सत्गुरु मानकर ऐसा करते हो। फकीरचन्द सत्गुरु नहीं है। फकीरचन्द की देह तो आज है कल न रहेगी। जैसे कबीर

ने कहा है :—

सतगुरु एक जगत में गुरु हैं, जो जग से कढ़िहारा ।
कहें कबीर जगत के गुरुआ, फिर फिर लें अवतारा ॥

जो देहधारी गुरु इस संसार में आया वह तो तुमको समझाने बुझाने के लिये आया और फिर चलता बना । जिसने उसकी बात को सुना समझा और विचारा और उसके अनुसार अपना जीवन बनाया वह अपने निज घर पहुंच गया और शेष सब इसी चक्र में रहे । इसलिये अपना इष्ट बजाय फकीरचन्द के शब्द ब्रह्म और पारब्रह्म रक्खो । तब तुम्हारा कल्याण होगा । अब तुम्हारी इच्छा है जो चाहे करो । मैंने अपनी ड्यूटी पूरी करदी । अब यदि तुम अपनी ड्यूटी पूरी करोगे तो तुम्हारा कल्याण होगा अन्यथा इस चक्र से छूटना कठिन होगा ।

सत्संग

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर ३-१-७२)

चलरी सखी अब गुरू के देश । जहां न काया कर्म कलेश ॥
तन-मन इन्द्री यह परदेश । छोड़ा भेख भवन का लेश ॥
सुनो कान से गुरु संदेस । सुरत शब्द से धाओ शेश ॥
ब्रह्मा विष्णु न गौर गनेश । जहाँ न नारद सारद शेष ॥
संत सुरत जहां किया प्रवेश । सतगुरु दया मिला वह देश ॥
काल कर्म की गई न पेश । तोड़े दांत और काटे नेश ॥
सतगुरु को अब करूँ आदेश । राधास्वामी पूरे धनी धनेश ॥

यह शब्द तुमने ध्यान से सुना होगा । हम यहाँ कहीं से आये हैं और हमको अपने असली घर जाना है । जहां से हम आये हैं वहाँ नारद आदि

नहीं हैं। वह तो अकह अपार, अगाध और अनामी की अवस्था है। वहाँ आदमी सुरत शब्द द्वारा ही जी सकता है। यह वेदशास्त्र कहते हैं। यही गायत्री मंत्र कहता है।

कल से श्रीमती मंजीतकौर धर्मपतिनी स्व० सरदार हरवंशसिंह इगलेंड से आई हुई है। सरदार हरवंशसिंह इंजीनियर थे। उनको मरे हुए एक वर्ष होने को है। श्रीमती मंजीतकौर उनकी बर्षी करने आई है। सरदार साहब पहले अफ्रीका में रहते थे। वह मेरे सम्पर्क में कैसे आये? मनुष्य जीवन में कई गलतियां करता है। फिर उसको उनका अफसोस होता है और वह उनसे बचना चाहता है। १०-१५ वर्ष हुए एक दिन जब अफ्रीका में सुबह अभ्यास करने बैठे तो उनके अन्दर बड़ा भारी प्रकाश प्रगट हुआ। उसमें मेरा रूप प्रगट हुआ। उस समय सरदार साहव मुझे नहीं जानते थे। और न मैं उनको जानता था। उसने मेरे रूप से पूछा कि तुम कौन हो? एसने वताया कि मैं हिन्दुस्तान का दयाल फकीर हूँ। छः महीने खोज के बाद उसको मेरा पता लगा। उसने श्रीमती मंजीतकौर को अपने दो बच्चों सहित मेरे पास भेजा। मंजीतकौर ने बताया कि प्रकाश की अधिकता के कारण इंजीनियर साहब बेहोश हो गये थे।

मेरे चित्त में विचार आता है कि यह क्रिया कर्म या वर्षी या श्राद्ध जो किये जाते हैं क्या इनमें सचाई भी है अथवा केवल एक रीति चली आरही है। हां है। मैंने अपनी स्त्री का क्रिया कर्म सत्संग में किया था और घरवालों ने अपने ढंग से घर में किया था।

वर्षी क्यों की जाती है क्योंकि मरने वाले प्राणी को शुभ भावना दी जाती है मरते समय भी प्राणी को ख्याल दिया जाता है। जब मुरदे को शमसान में आग लगा कर वापिस आते हैं तो तिनका तोड़ कर कहते हैं कि यत्र आयते तत्र गच्छते। क्रिया कर्म में भी ख्याल ही दिया जाता है कि ऐ प्राणी! तुम अपने आदि घर को जाओ। जब मेरी पहिली स्त्री मरी थी तो मैंने उसका क्रिया कर्म किया था। पिंड भी दिये जाते हैं। पहिले जौ के आटे का एक पुतला बनाया गया वह मेरी स्त्री का पुतला था। उसको गाय भी दी और कपड़े भी दिये। फिर उस पुतले के पाँव काट

दिये, फिर बांह और सिर काट दिये । यह क्रिया मुझ से कराई । मरने वाले के भाव और विचार के अनुसार उसके मन चाहती वस्तुयें उसके नाम पर दी जाती हैं और साथ ही यह ख्याल दिया जाता है कि अब अपने घर चले जाओ । हमसे अब तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं रहा ।

मेरा एक लड़का मर गया था । मेरी स्त्री उसके नाम पर दूसरे बच्चों को हर साल खिलोने दिया करती थी ताकि उसकी आत्मा यदि कहीं हो तो उसको शान्ति मिले । यदि कोई युवक मर जाय तो उसके नाम पर कपड़े देते हैं । यदि सुहागिन स्त्री मर जाय तो उसके नाम पर नथ देते हैं छोटा बच्चा मर जाय तो उसकी मां सात आठ दिन तक अपना दूध निकाल कर उस जगह डाल दिया करती हैं जहां उसको गाढ़ा हुआ होता है ।

ऐसा क्यों किया जाता है ? जिन लोगों ने वर्षी की होगी यह उनको पता होगा । जब सूक्ष्म आत्मा शरीर से निकल जाता है तो वह इस पृथ्वी से अलग हो जाता है । पृथ्वी सूर्य के चारों ओर ३६५ दिन में एक चक्रपूरा करती है । पृथ्वी का वह भाग जिससे उसका सम्बन्ध था यदि उसकी गति नहीं है हुई तो वह उसके सामने आयेगा । तो पुराने संस्कारों के कारण उस जगह की ओर वहांकी वस्तुओं की ओर और उन आदमियों की ओर जिनसे उसका सम्बन्ध था वह खिचेगा कि वह मेरा देश है । उसको अपना हित देना या शुभ भावना देना ही उसका क्रिया कर्म है ।

ऐसे ही श्राद्ध का सिद्धान्त है । इस संसार में हर एक वस्तु के रहने के बिशेष विशेष स्थान हैं । पानी जब भी जायेगा ढ़लाव की ओर जायेगा । इसका रुख हमेशा समुद्र की ओर अर्थात अपने भन्डार की ओर रहेगा । हिन्दू शास्त्रों के रचियता बड़े ही सूक्ष्म विचार धारा रखने वालों थे । जितने भी शरीर धारी मरते हैं जब तक उनको दूसरा चोला नहीं मिलता तब तक उनके रहने का स्थान पित् लोक है । मेरी समझ में पितृ लोक का स्थान चन्द्र लोक है । आकाश में आजकल के जाने वाले जो चन्द्रमा से पहाड़ों के टुकड़े लाये हैं, समाचार पत्रों में पढ़ा है कि उनकी जांच की गई है । उनमें शारीरिक जीवन नहीं है मगर उनमें शारीरिक जीवन के पैदा होने का माद्दा

(पदार्थ) मौजूद है। वह आत्मायें जिनको जन्म अभी तक नहीं मिला वह दूसरा शरीर मिलने तक पितृ लोक में रहती हैं। वह वहाँ स्थूल शरीर के बिना रहती हैं मगर वहां शरीर में आने की वासना रखती हैं। यह मेरा अनुभव है। एक वर्ष के बाद जब पृथ्वी घूमती हुई उस स्थान के या लोक के सामने आती है जो उन दिनों में हिन्दुओं ने श्राद्ध की रस्म रक्खी हुई है मुझे खेद है कि सूक्ष्म विषय समझाना कठिन हो रहा है। श्राद्धों के दिनों में परिवार वालों को पिछले मरे हुए प्राणियों को शुभ भावना देना चाहिये।

श्रीमती मंजीतकौर को कहना चाहता हूँकि तुम्हारे पति ने जो कुछ मैंने कहा या उसको लिखकर भेज रहा उसको समझ लिया होगा तो फिर वह यहां नहीं है। और यदि उसकी आत्मा कहीं है तो मैंने आज अभ्यास में में सच्चे हृदय से उसको शुभ भावना दी है कि वह अपने घर पहुँच जाय।

लोग मुझे गुरू मानते हैं मगर मैंने किसी को अपना चेला नहीं बनाया हाँ गुरू की जो असली ड्यूटी हैं वह जरूर पूरी करता हूँ। सरदार हरवंश सिंह मुझे अपना गुरू मानते थे। ऐसे ही सत्संगी जिनके अपने ही विश्वास के कारण मेरा रूप उनके अन्तर प्रगट हुआ या होता है मैं उनको अपना सतगुरू मानता हूँ क्योंकि उनके द्वारा मुझे सचाई की समझ आगई। आज मैंने अपने सतगुरु हरवंशसिंह की वर्षी पर सन्तों के सिद्धान्त के अनुसार तथा हिन्दू शास्त्रों और साइंस के सिद्धान्त के अनुसार श्रद्धांजलि दी है।

मैं सरदार हरवंशसिंह को सतगुरू स्वरूप क्यों कहता हूँ क्योंकि कहां अफ्रीका और कहाँ हिन्दुस्तान। मैं सच कहता हूँ कि मैं तो वहां गया नहीं और न मैं उस समय उसको जानता था। देहली वाला भूपसिंह भी इसी तरह मेरे सम्पर्क में आया था। हरवंशसिंह मेरे मासिक पत्रों को मंगवाकर पढ़ा करते थे। एक वार उन्होंने मुझे एक हजार रूपया भेजा मैंने ५००) रू० 'मनुष्य वनो' को और ५००) रू० 'शिव' को भेज दिये थे। फिर उन्होंने मुझे एक कीमती घड़ी भेजी। वह मैंने श्री हर विलास जी को देदी।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

मैंने उसका एक हजार रूपया और घड़ी अपने पास क्यों नहीं रखी क्योंकि यदि कोई आदमी गुरू के असली रूप को समझ कर मेरी सेवा करता है तो मुझे कोई ऐतराज नहीं और मैं ले लेता हूँ। मुझे इसका कोई दुख नहीं। जैसे अब मास्टर मोहनलाल मेरे सखा ने ढाई तीन सौ रूपया मेरे लिये खर्च किया है। मैं खुश हूँ। लेकिन यदि ओई अज्ञानवश मेरी सेवा करता है तो मैं नहीं लेता। कल श्रीमती मंजीतकौर ने एक हजार रूपया मेरे सामने रख दिया और कहा कि महाराज यह रूपया चाहे आप मन्दिर में दें चाहे अस्पताल में या गरीबों को दे दें, यह आप की इच्छा है। मैंने कहा बेटी मैं लालची नहीं हूँ। मैंने मन्दिर बनवाया अवश्य है लेकिन जिसने यह बनवाया है वह उसकी रक्षा भी करेगा। तुम बालबच्चेदार हो। यह रूपया ले लो और अपनी बिरादरी में जाकर कल को मर्यादा के अनुसार अपने पति की वर्षी की रस्म करो। फिर उसने जबरदस्ती ५००) रूपये दे दिये और मैंने उसी समय वह रूपया मन्दिर में दे दिया।

गुरू का असली रूप है ज्ञान। मैंने दातादयाल जी से बड़ा प्रेम किया था मगर मैं महसूस करता हूँ कि मेरा वह प्रेम अज्ञान का था मैंने जो कुछ उनको दिया वह अज्ञान में दिया। उनकी बात मेरी समझ में नहीं आती थी। उनका रूप मेरे अन्तर प्रगट होता था। मैं अज्ञान से उनकी सेवा करता था। गुरू का असली रूप समझाने के लिये उन्होंने मुझे यह गुरू पदवी दी थी और मुझे यह काम दिया था। अब बात मेरी समझ में आगई जो वास्तव में गुरू का रूप बतलाता है और अपने घर जाने का रास्ता बतलाता है वह असली गुरू है।

चलरी सखी अब गुरू के देश। जहां न काया करम कलेश ॥

गुरू का देश सत, अलख और अगम है। सुरत वहां से ही आई हुई हैं और वहाँ ही वापिस चली जायगी। वहाँ न स्थूल शरीर है न सूक्ष्म शरीर है और न कारण शरीर है। जब जीव यहां आकर दुखी हो जाता है तो कुदरत ऐसी स्थिति पैदा कर देती है कि जीव को किसी न किसी रूप में कोई सहायक अपने घर वापिस जाने के लिये मिल जाता है ताकि जो हम

पहिले थे वही हो जांय । पहिले हम अकाल पुरुष या परम तत्व आधार में या अनामी में थे । यहाँ हम शरीर में आये । इस शरीर में तरह-तरह के दुख हैं ।

तन मन इन्द्री यह परदेस । छोड़ा भेष भवन का लेश ॥

तन, मन और इन्द्रियाँ यह हमारा घर नहीं है । यह हमारा परदेश है । आदि घर से हम यहां इस तन और मन में आ गये । अब हम यह सोचते हैं कि हाय यह न हो जाय और वह न हो जाय । लेकिन चिन्ता करने की क्या आवश्यकता है । एक दिन यहाँ से जाना तो अवश्य है ।

ऐ मंजीत कौर ! तू चिन्ता छोड़दे । जिस रास्ते से और दुनियां के लोग मर कर जाते हैं उसी रास्ते से तेरा पति गया है । वह अस्पताल में मरा । मुझे नहीं पता कि उसको क्या हुआ । उस समय तुम लोग भी घर में नहीं थे ।

सुनो कान से गुरु संदेश । सुरत शब्द से धाओ शेष ॥

हमारा घर वह है जहाँ न ब्रह्मा है न विष्णु है और न महेश है । न वहाँ मन है न माया है और न वहाँ काया है । वहाँ चेतन है । वहाँ पहुँचने का साधन केवल शब्द योग और नाम है । गुरु ने यह संदेश दिया है कि अगर तुम अपने घर जाना चाहते हो तो ऐसे करो । यह है संत मत । वहाँ यह तो नहीं लिखा कि गुरु आकर तुमको वहाँ ले जायगा । गुरु तुमको रास्ता बतायेगा । चलना तुमने आप है । चूँकि मन चंचल है, तुम्हारा शब्द और प्रकाश खुला हुआ नहीं है इसलिये जीव सहारा चाहता है । यह सहारा है बाहर के गुरु का । इस के बाद गुरु स्वरूप है मगर वह भी हमेशा नहीं है । फिर मालिके कुल का इष्ट रखना पड़ता है ।

जो आदमी जीवन भर फकीरचन्द को या बाबा सावनसिंह जी को अथवा किसी और महापुरुष को गुरु समझ कर उनका ही ध्यान करते रहते हैं वह अपने घर नहीं जा सकते । मगर वह भी धन्य है । उनको अच्छी योनि मिलेगी । हमारा घर तो है अकह अपार अगाध और अनामी अथवा उन्मुन अवस्था है ।

यदि वहां नारद शारद और ब्रह्मा विष्णु आदि का रूप नहीं है तो वहां फकीरचन्द या किसी और गुरू का रूप भी नहीं है। सारी दुनियां पथ भ्रष्ट हो गई मगर दुनियां का भी क्या दोष। इस मन से निकलना सरल काम नहीं है। इसके लिये ध्यान योग और अजपा जाप है। यह इतना गहरा और पक्का हो जाना चाहिये कि इसमें कोई और रूप न बन सके। इस अवस्था का नाम महा सुन्न है। इससे आगे आत्मिक अवस्था आती है या दसवें द्वार से आगे रूहानियत या आत्मिक अवस्था आती हैं।

संत सुरत जहाँ किया प्रवेश। सतगुरू दया मिला वह देश।

जब मनकी निर्विकल समाधि लग जाती है तो इसके बाद हमारा देश है। जब मनुष्य बहां पहुंच जाता है तो फिर बह समझता है कि यही आदेश गुरू ने दिया था।

काल कर्म की गई न पेश। तोड़े दांत और काटे केश॥

काल है समय। जब सुरत वहां पहुंच जाती है तो समय का पता ही नहीं लगता। जो विचार या कर्म हैं वह समाप्त हो जाते है तब हमारा देश आता है।

सतगुरु को अब करूँ आदेश। राधास्वामी पूरे धनी धनेश॥

मैं सतगुरु रायास्वामी को नमस्कार करता हूँ। राधास्वामी क्या है ?

राधा आदि सुरत का नाम। स्वामी आदि शब्द पहिचान॥

आज का सत्संग मैंने अपने प्यारे हरवंससिंह की याद में दिया है और उसको श्रद्धांजलि भेंट की है। ऐसे सत्संगियों को मैं अपना सतगुरु मानता हूँ जिनके कारण मुझे ज्ञान हुआ। मैंने उसको समय की आवशक्ता के कारण प्रगट कर दिया। दूसरे गुरुओं और महात्माओं ने इसको पर्दे में रखा और अपनी गद्दियाँ बनाई। उनका का भी दोष नहीं। दुनियां सचाई को सुनने को तैयार नहीं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर ७—७—७१)

तेरी गति मति कौन लखे ॥
वेद न जाने महिमा तेरी, ऋषि मुनि फिरें भरम की फेरी ॥
निन्दा तेरे दर की चेरी, आन ही आन बके ॥
अपरम्पार पार निःपारा, तू ही एक सार का सारा ।
अजर अमर अविनाशी धारा, घटघट व्याप रहे ॥
नहि एक और नहीं अनेका, सब विधि किया विचार विवेका ।
भूले ज्ञानी ध्यानी भेषा, कोई न मरम लहे ॥
तू प्रकाश है तू परछाईं, तू ही परम तत्व तू झाईं ।
कैसे स्तुति करूँ गुसाईं, सुधि बुधि भरम बहे ॥
अनहित सहित सकल हितकारी, निराधार तू जगदाधारी ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सेवक शरण गहे ॥

कल दोपहर के बाद चित्त बेचैन था । क्यों ? दोपहर को मैं यहां सो गया । एक अनुचित स्वप्न बसरा बगदाद का मैंने देखा । जब होश आया तो सोचा कि फकीरचन्द ! तेरा जीवन मालिक के मिलने के साधन में व्यतीत हो गया । साकार और निराकार की भक्ति की । सुरत शब्द योग किया, गुरु सेवा की, परोपकार करने और बुराई से बचने की कोशिश की । यह जीवन है । समाप्त होने पर नहीं आता । मैं चाहता हूँ कि यह मेरे बसरा बगदाद के पुराने संस्कार जो मेरे मन पर पड़े हुये हैं वह मेरे सामने न आयें । जाग्रत में तो मैं किसी हद तक इनको काबू कर सकता हूँ मगर स्वप्न में नहीं । कल दिन भर उदासी रही और प्रार्थना ही करता रहा । अब अक्ल आगई है । क्या अच्छा होता कि मुझे यह ज्ञान न होता और मैं सीधा सादा भक्त होता । यह मेरा खोटा भाग्य जो मुझे बाल की खाल

निकालने की बुद्धि आ गई। रात को भी इसी ख्याल में रहा। अब भी शरणागत ही था। इस मन को धोते हुये आयु बीत गई। बहुत कोशिश की कि यह मन न रहे मगर यह रहता है। अपने वश की बात नहीं। दातादयाल जी ने शब्द लिख दिया। क्या संतों को इसका पता लगा ? मैंने परसों चन्दीगढ़ में सत्संग दिया। मैंने कहा कि हुजूर बाबा सावनसिंह जी संत सतगुरु थे। क्या उनको क्रोध नहीं आता था ? आता था। यदि नहीं आता था तो सत्संगियों को सोटी कैसे मारते थे ? कैसे मानूं कि उनके मन में क्रोध नहीं आता था। दूसरे सन्तों और महात्माओं की भी यही दशा है। दूसरों ने अपने मन के भाव पब्लिक के सामने प्रगट नहीं किये। सब बगुले भक्त बने रहे। फिर मैंने कहा कि लोग कहते हैं कि संतों में काम नहीं। साहब जी महाराज सन्त सतगुरु कहला गये और दयाल बाग बना गये। क्या गुरु पद पर आने के बाद उनके बच्चा नहीं हुआ ? क्या बिना काम भोग के हुआ ?

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा इसलिये अपने कर्म भोग वश भाषण दिये जा रहा हूँ। मुझे भी ख्याल था कि मैं मैदान मार लूंगा। यह करूँगा वह करूँगा। अलख और अगम को प्राप्त करूँगा। प्राप्त तो कर लिये मगर अनुभव ने सिद्ध किया कि होता वही है जो उस रचनहार की मौज है। मैं तो अब बेवश हो गया। मेरे अन्तर जितना जोश और भाव था वह सब समाप्त हो गया। अब कहाँ पहुँचा ? 'शरणागतम्'। तब ही तो मैं कहता हूँ कि यह ज्ञान मेरे लिये दुख का कारण बना। यदि अज्ञानी रहता तो शरणागत तो होता रहता, राम के शरणागत होता या श्री कृष्ण के आगे होता या उस एक प्रभु के आगे शरणागत होता। अब इस ज्ञान ने बुद्धि को तीक्षण कर दिया है। बुद्धिमान ही समझेंगे दूसरे नहीं।

अब चूंकि बुद्धि आ गई है इसलिये उस अनन्त के आगे शरणागत होता रहता हूँ जिसका कोई रंग रूप नहीं है। जो न शब्द है और

न प्रकाश है। मैंने बड़े शब्द सुने। शब्द सुनने पर भी मेरे अन्तर जो पुराने संस्कार जो प्रकृति के है वह उभरते ही रहते हैं।

मैंने बाबा सावनसिंह जी और साहब जी महाराज के उदाहरण दिये हैं। क्या वह तथा और भी सब संत काम क्रोध लोभ मोह अहंकार के पीछे डण्डे लिये फिरते नहीं। वह बीन भी और नाम भी सुनते हैं और सुनते रहे तो फिर उनको क्रोध क्यों आया और काम क्यों आया ? जो कुछ किसी के अन्तर प्रगट हुआ, वह तो किसी ने कहा नहीं। दो बातें काम और क्रोध की तो दुनियाँ के सामने आ जाती है। लोभ और लालच शायद उनमें न हो मगर मैं नहीं मानता। यदि मैं कहूँ कि मेरे अन्दर लोभ लालच की इच्छा पैदा नहीं होती तो मैं कैसे कह सकता हूँ कि मैं बरी हूँ जबकि मेरे लड़के के या कटनी वालों के रुपये आने में यदि देर हो जाती है तो क्या मेरे मन में रुपये का ख्याल नहीं आता ? आता है।

मैं इस लायन में बहुत दौड़ा हूँ। मेरा परिणाम क्या होगा, मुझे पता नहीं। यह उस मालिक के हाथ में में। मेरा मार्ग अब शरणागतम् का है। मालिक तेरी इच्छा। तेरी मौज ! जो इच्छा हो किसी से कराले। मेरी तो सारी शक्ति समाप्त हो गई। शरणागतम् हर एक आदमी का अपना-अपना अनुभव है। कोई भी कृष्ण के आगे शरणागत होता है, कोई निर्गुण के आगे। कोई उसको शब्द समझ कर, कोई उसे प्रकाश समझ कर उसकी शरण में जाता है। मेरे जैसे उसको अनन्त समझ कर उसकी शरण लेते हैं मगर वह है और अवश्य है। इससे कोई भी इंकार नहीं कर सकता।

तेरी गति मति कौन लखे।
वेद न जाने महिमा तेरी, ऋषि मुनि फिरें भरम की फेरी ॥

अब मैं यदि यह कहदूँ कि—'संत न जानें गति मति तेरी' तो क्या यह ठीक नहीं है ?

भरम में आकर गद्दियाँ बनाईं, डेरे बनाये और चेले बनाये।

यदि वेदों को पता नहीं लगा तो संतों को भी तो पता नहीं लगा। मैं अपने जीवन का कच्चा चिट्ठा तुम्हारे सामने सुना रहा हूँ। जाग्रत में तो में कंट्रोल कर लेता हूँ मगर स्वप्न में नहीं होता। बसरा बगदाद में मैंने जो रेल और तार के महकमे में काम किया था उसके संस्कार अभी तक स्वप्न में मेरा पीछा नहीं छोड़ते। ऋषि मुनि और संत भी इसी भ्रम की फेरी से बच न सके। चूँकि मुझे पता नहीं लगा इसलिये मैं कहता हूँ कि किसी को भी पता नहीं लगा। जैसी-जैसी जिसकी प्रकृति बनी उसके अनुसार जिसके कर्म में भक्ति है वह भक्ति करता है, जिसके कर्म में चोरी है वह चोरी करता है जिसके भाग्य में नेकी है वह नेकी करता है, जिसके कर्म में गुरुयायी है वह गुरुयायी करता है। सबका अपना-अपना कर्म है या उस मालिक की मौज है।

निन्दा तेरे घर की चेरी, आन ही आन बके।

निन्दा क्या है ? अमुक अपूर्ण और अधूरा है। उसमें यह कमी है आदि आदि। हर एक आदमी कहता है कि निन्दा करना बुरा है। सत भी कहते हैं कि हम निन्दा नहीं करते। कैसे मानूँ ? उन्होंने कहा कि वेदान्ती भी भूले, सर्गुण वाले भी भूले, निर्गुण वाले भी भूले, क्या यह निन्दा नहीं है। देवताओं के पुजारी भी भूले। क्या यह निन्दा नहीं है। मैं किसको बुरा कहूँ किसको भला कहूं। यहां कौन अच्छा है और कौन बुरा है।

न कोई भला है न कोई बुरा है।
भले में खुदा है बुरे में खुदा है ॥

यह सब उस मालिक की लीला है।

अपरम्पार पार निःपारा। तू ही एक सार का सारा ॥

उसका किसी को पता नहीं है। उसकी महिमा को मनुष्य समझ नहीं सकता। हम कैसे कहते हैं कि देवताओं के पुजारी बुरे हैं। यह भी तो निन्दा ही है। वह तो एक सार का सार है। वह एक

तत्व है। वह क्या है, किसी को भी कुछ पता नहीं। मैं उसको अकह अगाध और अनामी कहता हूं। सब उसी की लीला है। भलाई बुराई धर्म अधर्म सब उसी के हाथ में है।

अजर अमर अविनाशी प्यारा, घट घट व्याप रहे।

वही सब कुछ है। सब में है और सब जगह है। वह अजर अमर और अविनाशी है। मैं तो विवश होकर मौन हो जाता हूँ।

नहि एक और नहीं अनेका। सब विधि किया विचार विवेका।
भूले ज्ञानी ध्यानी भेषा, कोई न मर्म लहे॥

किसी को कोई पता नहीं मिला। सब दौड़ दौड़कर थक गये और मैं भी अब ८४ वर्ष का हो गया हूँ, थक गया हूँ। चूँकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा इसलिये कहता हुआ चला आ रहा हूँ। मेरे वश की बात नहीं है। उसकी मौज ही ऐसी है। उसने खेल खिलाना था वह खिला रहा है। मैंने न कुछ किया और न करने योग्य था।

तू प्रकाश है तू परछाई, तू ही परम तत्व तू छाई॥
कैसे स्तुति करूँ गुसाईं, सुधि बुधि भ्रम रहे॥

वह एक तत्व है जो भिन्न-भिन्न रूपों में खेलता है। उसकी लीला अनन्त है। कैसे और किन शब्दों में उसकी स्तुति करूँ। कैसे गुण गान करूँ। गुणगान भी एक भ्रम है वह तो गुणातीत है।

अनहित सुरत सकल हितकारी। निराधार तू जगदाधारी॥

अनहित भी वही है और हित भी वही करता है जब उसकी दया होती है तो वह हमारे मन को ठीक रखकर अपने चरणों में रखता है अन्यथा मन इधर उधर भटकता और टक्करें खाता रहता है।

राधास्वामी चरन शरण बलिहारी, सेवक शरण चहे।

सेवक क्या चाहता है और मेरा अन्तिम निष्कर्श क्या निकला? शरणागतम्। तेरी इच्छा पूर्ण हो। जैसी मौज है वैसी ही करा। यह तेरी इच्छा है। अपने वश की कोई बात नहीं।

बेफिक्री

(ले०—सेठ दुर्गादास जी चंडीगढ़)

बेफिक्री एक अमूल्य भेट है। ईश्वर प्रदत्त देन है। जो संतों के भाग्य में है। वर्षों की पूजा, भक्ति, ज्ञान और अभ्यास के बाद बेफिक्री की दशा आती है। इससे बढ़कर निवृति मार्ग में और कोई बात नहीं है। बेफिक्री रहनी की अवस्था है। इसलिये बेफिक्री सन्तों और महात्माओं का आदर्श है। बेफिक्री मन की एक दशा का नाम है, जो बड़ी विलक्षण है। इसलिये इसकी इच्छा करते हैं

चाह गई चिन्ता गई, मनुआं बेपरवाह ।
जाको कुछ नहिं चाहिये, वह शाहों का शाह ॥

लेकिन सवाल तो यह है कि क्या यह दशा ठीक है और क्या किसी को इस शरीर में रहते हुये यह दशा प्राप्त हो सकती है ?

समाधि की अवस्था दूसरी है। वहां चिन्ता का क्या काम ! लेकिन जब समाधि से उत्थान होगा इस शरीर में आना अनिवार्य है। जब शरीर है तो वासना का होना प्राकृतिक है। इच्छा के बिना मन के बिना यह शरीर स्थित नहीं रह सकता। जब तक मन है, इच्छा उत्पन्न होती रहेगी।

यदि इच्छा न रही तो वह मनुष्य इस शरीर में रहता हुआ मजजूब समझा जायगा। मन न रहा, सुधि न रही, चेतन्यता न रहेगी। मन के कारण ही यह चेतन्यता में है। मन की दशा ठीक है तो होश भी ठिकाने है और बुद्धि भी काम ठीक करेगी। संसार के सम्पूर्ण कार्य—शारीरिक, मानसिक और आत्मिक ठीक होंगे। बुरा और भला काम मन के कारण होता है। इच्छा से ही मन में चिन्ता होती है। इसलिये जब तक शरीर है बेफिक्री का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। चिन्ता कम हो या अधिक यह दूसरी बात है। महापुरुष अपने ज्ञान बल से, विवेक बल से चिन्ता दूर कर लेते होंगे। यदि

बेफिक्री इस शरीर में रहते हुये प्राप्त हो सकती है तो जिस महापुरुष ने बेफिक्री का स्वाद चाखा है वह महापुरुष बेफिक्री पर प्रकाश डाल सकता है अन्यथा बुद्धि इस बात को मानेगी कि मनुष्य इस शरीर में रहते हुये बेफिक्र नहीं हो सकता।

राधास्वामी मत को अपनाये हुये मुझे भी आज पचास वर्ष हो गये। पचास वर्ष के सत्संग के बाद यह कहता हूँ कि जब तक शरीर है बेफिक्री आ ही नहीं सकती। हाँ बेफिक्री और बेफिक्री में अन्तर अवश्य है। कोई चिन्ता फिक्र में रोता पीटता है। खाना पीना और नींद हराम! स्वास्थ्य गिर जाता है। उदासी छा जाती है। चहरा मुरझाया रहता है। जीवन जीवन नहीं रहता।

दूसरे अनुभवी पुरुष हैं जो चिन्ता तो करते हैं लेकिन चिन्ता की परवाह नहीं करते। चिन्ता हुई। चिन्ता को दाता या मालिक के भरोसे छोड़ दिया। जो होगा ठीक होगा। उसकी मौज! यह कहकर बेफिक्र होने की कोशिश करते है।

मेरा अपना ख्याल है कि सांसारिक व्यक्ति के लिये बेफिक्री का जीबन कोई जीवन नहीं। बेफिक्री का जीवन नीरस और अप्रिय होता है। बेफिक्र आदमी बिल्कुल निकम्मा समझा जाता है। उसका जीवन इसके लिये भार बन जाता है। दुख का कारण हो जाता है भला ऐसा आदमी जिसको कोई फिक्र ही नहीं इस दुनियां में क्या उन्नति करेगा! इसलिये बेफिक्री एक नियामत है। जिसको इस दुनियां में कुछ नहीं मिला, इस दुनियां में कुछ प्राप्त नहीं किया कोई उन्नति नहीं की, उसको निवृति में क्या मिलेगा।

जाको दर्शन इत्त है, ताको दर्शन उत्त।
जाको दर्शन इत नहीं, ताको इत न उत॥

बेफिक्री का जीवन अप्रिय है।

फिर दीन का फिकर दुनियां का होना चाहिये।
इन्सान को कभी मदरा न होना चाहिये॥

एक समय आया जब थोड़ा सा हमला बेफिक्री का मुझ पर हुआ। उस समय में यह महसूस करने लगा कि मैं तेली के बैल की तरह काम करता हूं। जीवन से आसक्ति कम हो गई। यहां तक कि इच्छा पैदा हुई कि अब जीने से क्या लाभ ! यह जीवन समाप्त हो जाय तो अच्छा। इस दुनियां में मेरा क्या काम है आदि आदि। ऐसा सोचने के लिये विवश हो गया क्योंकि सब चिन्तायें समाप्त हो चुकी थीं।

हुजूर की दया से रोटी का प्रबन्ध हो चुका था। ठेकेदारी का काम बन्द हो गया। जवानी का जोश जाता रहा। बूढ़ा हो गया। दूसरा काम करने को चित्त नहीं चाहता था। परिस्थिति ऐसी होगई कि नया काम बिल्कुल न करूँ।

हर तरह का आराम प्राप्त है। मकान रहने को, कपड़ा पहिनने को, और रोटी खाने को। सुबह शाम हुजूर के गुण गाना। हर प्रकार के आराम के होने पर भी अपनी हालत पसन्द न थी। समय काटना कठिन हो गया। जीवन एक बोझ लगने लगा। तंग आ गया। दुखी हो गया। सुबह शाम हुजूर से प्रार्थना करने लगा कि बेफिक्री का जीवन, बेकारी का जीवन समाप्त करदे। मुझे ऐसे जीवन की इच्छा नहीं। दाता ने मेरी प्रार्थना सुनली। मुझ पर दया हुई। काम मिल गया।

फिर क्या है ? बेफिक्री जाती रही। फिक्र मिल गई। सुबह उठने की फिक्र। काम पर ठीक समय पर जाने की फिक्र आदि आदि। यद्यपि यह साधारण फिक्र है लेकिन फिक्र तो यह है। इसमें आनन्द है। इसमें जीवन प्रसन्न रहता है। इसलिये यदि जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो फिक्र का जीवन होना चाहिये। हर समय काम का फिक्र रक्खो। सवाल यह होना चाहिये—'अब मैं क्या करूँ ?' जब कभी काम से निवृत हो जाओ, यह सवाल अपने आपसे किया करो। तुरन्त काम मिल जायगा।

यह लेख मैंने महाराज जो को सुनाया। कहने लगे कि सन्तों की बेफिक्री का मन्तव्य इनकी समझ में यह बैठता है कि जीवन में काम के बिना गुजारा नहीं। काम करने की वासना स्वयं एक फिक्र है। मगर यदि निष्काम कर्म हो तो कर्म करता हुआ अकर्मक हो सकता है। संतों की बेफिक्री यही है कि कर्म करता हुआ अकर्मक रहे। यह गीता की शिक्षा का सारांश है।

सत्गुरु सबका कल्याण करें।

मिनिस्ट्री आफ एग्रीकलचर

पोटाश से अच्छी किस्म की तम्बाकू

बर्ले तम्बाकू की फसल में १५० से ३०० किलो फी हैक्टर के हिसाब से पोटाश डालने से तम्बाकू की बढ़िया पत्तियाँ मिलती हैं और पौधे भी अच्छी तरह बढ़ते हैं।

पोटाशियम सल्फेट के रूप में पोटाश की आधी मात्रा पौधों की रोपाई से पहले और इसके बाद शेष मात्रा पौधों के जमने से पहले डालनी चाहिए।

पोटाश की कमी से पत्तियां मुड़ जाती हैं तथा उनकी चोंच और ऊपरी किनारा पीला पड़ जाता है जिसमें बहुत घटिया किस्म की तम्बाकू मिलती है।

अरंडी की एक नयी किस्म

कम समय में भारी पैदावार

—:o:—

तामिलनाडु के कृषि विभाग के वैज्ञानिकों ने अरंडी की कम समय में पकने वाली किस्म आर० सी०—१३७७ निकाली है।

उनका कहना है कि इस किस्म से खराब मौसम होने पर भी ९५ से १०० दिन के अन्दर प्रति हैक्टर १७५० किलो० पैदावार मिलती है। दिसम्बर, जनवरी में धान की फसल काटने के बाद खाली खेतों में उगाने के लिये यह किस्म काफी उपयुक्त है।

इसके बीज में तेल की मात्रा ५३ प्रतिशत होती है और इसे विभिन्न प्रकार की मिट्टी एवं जलवायु में उगाया जा तकता हैं।

Registered No. L.

महर्षि शिवब्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकों की सूची

सम्पूर्ण महारामायण सजिल्द	६)	ओ३म् नाविल	२.२५
श्रीमद्भगवद्गीता भाग १-२	२.५०	झलकदार मोती	२.००
नानक योग ३ भाग सजिल्द	४)	गिरहदार मोती	१.००
राधास्वामी योग ६ भाग सजिल्द	५)	शाहवार मोती	१.२५
कबीर योग प्रथम भाग	२)	रंगदार मोती	२.००
" " द्वतीय "	१.७५	दलदार मोती	२.७५
" " तृतीय "	१.५०	कजदार मोती	२.००
शरणागति योग	.७५	शिवजी की अद्भुत कहानी	१.५०
उपासना योग	.७५	चमकदार मोती	२.००
कर्म योग	.७५	आदर्श भारतीय नारियां	१.००
आनन्द योग प्रकाश	२.५०	फकीर भजनावली	१.००
Light on Anand yog	.३)	शब्द गुन्जार भाग १,२,३	३.५०
आत्मिक प्रायमर	.५०	शब्दों का गुटका	०.५०
कबीर आद्यज्ञान प्रकाश	२.००	नन्दू भाई की साखी	१.२५
पंथ सन्देश	३.००	कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१.००
कथा कल्पद्रुम	१.००	कबीर शब्दावली	.७५
सप्ताह विचार	१.५०	नैयर आजम प्र०भा०	१.५०
शाही पति परायण	१.००	सत कबीर की साखी	१.७५
शाही भूत	१.००	पिंगल साखी	.६०
शाही डाकू	१.७५	स्वास्थ्य और भोजन	१.००
शाही लकड़हारा	२.६०	रा०स्वा०मतप्रकाश वचनसार	१.००
शाही जादूगरनी	२.५०	जीवन सुधार	१.२५
शाही भिखारी	२.६०	अनमोल उपदेश	१.००
आबदार मोती	१.७५	विचार दर्पण	१.००
ताबदार मोती	१.५०	विचारशक्ति अथवा मनोविज्ञान	१.५०
आत्मिक उत्कर्ष	१.००	विचारांजलि	१.५०

शिव साहित्य प्रकाशन मण्डल **कार्यालय—'शिव'**

पोस्ट दयालनगर, अलीगढ़(उ०प्र०)लेखराज नगर, अलीगढ़(उ०प्र०)

सतीशचन्द्र मीतल द्वारा दयाल प्रिन्टिग प्रेस, लेखराज नगर, अलीगढ़ में मुद्रित

Regd. No. A—808

सम्पादक व प्रकाशक—
देवीचरन मीतल
लेखराज नगर,
अलीगढ़ ।

ग्राहक सं० 202·164

श्रीमान् C. Gajraj Mysker Hindi pai
Rathode Building,
Pochamma Gali,
Jumerat Bazar,
Nizamabad. (A.P.)